Versum posterioris strophae secundum qui in codice ita sonat:

तत्पर्यन्तप्रगलितनवैश्छिन्नहारैरिव रात्रेः

haud vereor ne justo audacius emendarim.

87. H. विप्रकीर्णो°.

88. D H. निश्वासेन W. विश्वासेन. - H. लम्बि. - D. कथमुपनमेत् W. क्षणमपि भवेत्.

89. D. उन्मोचनीय et विषमाद्.

90. D H. सजलगुरुभिः.

91. W. कोमलं pro पेवलं. - D. अश्रं. - B. जलकणमयं D H. नवजलमयं.

92. Antecedenti male praeposita est in D. - Omnes habent मन्य° (D. praeterea omisso Anusvâra सुभगमन्य°), quod sensu cassum est, unde dedi मन्यु.

94. D. वामो वास्याः et mox नवपरिचितं. - H. संवाहनस्य. Pro कनक D. praebet सरर (?)

95. D. अन्वास्यैनां pro तत्रासीनः haud male. - idem सहस्व.

96. D. विद्युद्गर्भे (sic) निहितनयनां. H. विद्युन्नेत्र° (sic). - D. °वचनो.

97. W H. त्वत्संदेशान्म° male. D. तत्संदेशाद्हृदयनि°. - D. सान्द्रस्निग्धैर्.

98. W B. संभाव्य चैवं. - W. उपगतः.

99. W B. आयुष्मन् - ब्रूया एव. - D. नियुक्त; idem versum quartum ita exhibet: पूर्वाप्रवास्यं सुलभविपदां प्राणिनामेतदेव

100. D. तनु च pro सुतनु - Id. अश्रद्रवं W. अश्रुद्रुतं - D. उष्णोच्छ्वासं.

101. D. तत् pro यः - H. अगाद् pro अभूद्. - D. लोचनानामगम्यः quod placet. - H. विरहित.

102. W B H. दृष्टिपातान्, sed concinnior singularis est. - H. वक्त्रच्छायं.